

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 30, ईसा। 63-66

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 30, यशायाह अध्याय 63 से 66 है।

आइये मिलकर प्रार्थना करें। पिता, हम आपके सेवक हमारे भाई यशायाह के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। इस आदमी के लिए धन्यवाद जो आपकी आत्मा के प्रति खुला था, आपकी आत्मा से प्रेरित था, आपकी आत्मा से प्रेरित था। धन्यवाद कि उसके माध्यम से आप न केवल 2,700 साल पहले उस समय में बल्कि अब भी अपने लोगों से बात करने में सक्षम थे।

धन्यवाद। हम प्रार्थना करते हैं कि एक बार फिर आप हमारी मदद करें ताकि हम और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकें कि आप अपनी पुस्तक में क्या कह रहे हैं और फिर इसे अपने जीवन में अधिक स्पष्ट रूप से लागू करने में सक्षम हो सकें ताकि हम वास्तव में आपके जैसे ईश्वर के लोग बन सकें। हमें होने के लिए बुलाओ। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

ठीक है, हम आज रात अध्याय 60 से 62 को देख रहे हैं। पुस्तक के उस अंतिम खंड का मध्य भाग, जो हमने कहा है, तकनीकी शब्द है, चियास्म।

और पुस्तक का मध्य भाग अध्याय है, और चियास्म का मध्य भाग अध्याय 60 से 62 है। हमने देखा कि कैसे शुरुआत और अंत इस सबके लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और वह है धर्मी अन्यजातियों। यह परमेश्वर का इरादा है और हमने इसे शुरुआत में ही अध्याय 2 में देखा था। यह सब क्या है? यह इस बारे में है कि दुनिया ईश्वर को जानने लगी है, जैसा कि अंतिम अध्याय, अध्याय 66 में कहा गया है, उसकी महिमा को देखने के लिए।

और फिर, मैंने इसे अपने अध्ययन के दौरान कई बार कहा है, लेकिन यशायाह की पुस्तक एक सिम्फनी है। सिम्फनी की विशेषता ये विषय हैं जो सतह पर आते हैं और फिर वापस चले जाते हैं और फिर यहां आ जाते हैं। और इनमें से एक विषय अध्याय 6 में देखा गया है। सेनाओं का परमेश्वर यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है।

सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है। और इस अंतिम अध्याय में, सभी राष्ट्र आएँगे और परमेश्वर की महिमा देखेंगे। एक बार फिर, जैसा कि मैंने आपसे कई बार कहा है, पुराने नियम में महिमा कोई क्षणिक और क्षणिक चीज़ नहीं है।

महिमा वास्तविकता है। यह महत्वपूर्ण है। यह ठोस है।

और इसलिए परमेश्वर का लक्ष्य है कि सभी लोग उसकी वास्तविकता को देखें। वे दुनिया में उसकी वास्तविकता देखेंगे। वे शब्द में उसकी वास्तविकता देखेंगे।

जैसे ही परमेश्वर हम पर अपनी महिमा प्रकट करेगा, वे अन्य लोगों के जीवन में उसकी वास्तविकता देखेंगे। तब हमने देखा कि वास्तव में, लोग स्वयं ही अधर्मी हैं, अधर्मी यहूदी। इन लोगों की खातिर उन्हें जो बनना चाहिए था, वे वैसा बनने में असफल हो जाते हैं।

और इसलिए, भगवान दिव्य योद्धा के रूप में आते हैं, जो वास्तव में दुश्मन को हराते हैं, और जैसा कि मैंने तर्क दिया है, पाप का दुश्मन। और फिर परिणाम वही है जो हम आज रात इन तीन अध्यायों में पाएंगे। अब इससे पहले कि हम इसमें आगे बढ़ें और आपको याद दिला दूं कि मुझे लगता है कि पुस्तक की संरचना कैसी है, मैं इन सबको एक साथ खींचना चाहता हूं।

अब मैं कहता हूं कि मुझे लगता है क्योंकि इस तरह के एक बड़े जटिल काम में, यह सब सामग्री एक साथ कैसे फिट बैठती है, इस पर कई, कई राय हैं। लेकिन मैंने आपको सुझाव दिया है कि अध्याय एक से छह तक दासत्व का आह्वान है। और हम वहां समस्या देखते हैं।

यह इज़राइल, यह पापी, भ्रष्ट इज़राइल, कभी शुद्ध, पवित्र इज़राइल कैसे हो सकता है जिसके पास सभी राष्ट्र परमेश्वर की शिक्षा सीखने के लिए आते हैं? और जो समाधान मैंने आपको सुझाया है वह तब है जब अशुद्ध होंठ वाले व्यक्ति को जो अनुभव हुआ वही अनुभव समग्र रूप से लोगों को भी हो। फिर हमने देखा कि कैसे अध्याय सात से उनतीस तक में विश्वास दासत्व का आधार है। क्या इस ईश्वर, इस्राएल के इस पवित्र व्यक्ति पर भरोसा किया जा सकता है? या फिर हम मानवता, मानवता के राष्ट्रों पर भरोसा करेंगे? और हमने देखा कि कैसे उन अध्यायों में, भगवान ने उन्हें दर्शाया कि राष्ट्रों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।

मानवता पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लेकिन वह पूरी तरह भरोसेमंद है। और हमने देखा कि विश्वास का वह विषय, या यहाँ यशायाह और पूरे पुराने नियम में विश्वास का सामान्य पर्याय क्या है? मेल समझ गया।

इंतज़ार। प्रभु की प्रतीक्षा करो। क्योंकि वास्तव में, हम कह सकते हैं कि हमें उस पर भरोसा है, लेकिन अगर हम आगे बढ़ते हैं और समस्या को स्वयं हल करने का प्रयास करते हैं, तो हम स्पष्ट रूप से उस पर भरोसा नहीं करते हैं।

ऐसा तब होता है जब हम अपनी योजनाओं, अपनी समझ, अपने उद्देश्यों को एक तरफ रख देते हैं और भगवान को उन्हें अपने तरीके से पूरा करने की अनुमति देते हैं, तभी हम वास्तव में उस पर भरोसा करते हैं। जब आप 39 के अंत तक आते हैं, तो यह साबित हो चुका होता है कि भगवान पर भरोसा किया जा सकता है। यरूशलेम पर असीरियन हमले के संकट में, हिजकिय्याह ने भगवान पर भरोसा किया और सभी बाधाओं के बावजूद, भगवान ने उसे बचाया।

साथ ही, हम देखते हैं कि हिजकिय्याह मसीहा नहीं है। हिजकिय्याह ग़लत है। यह मसीहा जिसका वादा किया गया था, विशेष रूप से यहाँ अध्याय 11 में, हमें हिजकिय्याह के अलावा किसी और की तलाश करनी होगी।

ये वो बच्चा नहीं है जो सरकार जिसके कंधों पर पैदा होता है। हमें किसी और की तलाश करनी होगी। तो, अध्याय 40-55 में, हमारे पास अनुग्रह, उद्देश्य और सेवकाई के साधन हैं।

और 40-48 में हम उस प्रेरणा को देखते हैं। वे परमेश्वर के चुने हुए सेवक हैं। इस तथ्य के बावजूद कि वे अपने पापों के परिणामस्वरूप निर्वासन में हैं।

फिर भी, परमेश्वर ने उन्हें त्यागा नहीं है। उन्हें चुना गया है। और वह देवताओं के विरुद्ध अपने मुकदमे में उनका उपयोग करने जा रहा है।

वह उनका उपयोग यह साबित करने के लिए करने जा रहा है कि केवल वह ही ईश्वर है, और कोई नहीं है। लेकिन फिर सवाल वही उभरता है और यही मकसद है। अनुग्रह, अयोग्य, अयोग्य, उन्हें भगवान पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करने वाला है।

लेकिन सवाल यह है कि कैसे? क्या परमेश्वर बस उनके और हमारे पापों को नज़रअंदाज कर देगा? बस ऐसे व्यवहार करें जैसे हमने कुछ नहीं किया है? और मैंने बार-बार तर्क दिया है कि भगवान ऐसा नहीं कर सकते। निःसंदेह, वह कुछ भी कर सकता है। लेकिन अगर उसने हमारे पापों को अनदेखा कर दिया, तो कारण और प्रभाव पर बनी दुनिया बिखर जाएगी।

हमने पाप किया है, और इसलिए उसके प्रभाव के बारे में कुछ करना होगा। और उसका असर यह होता है कि नौकर नौकरों के लिए अपनी जान दे देता है। और फिर वही साधन है।

उद्देश्य, 40 से 48। 49 से 55 में साधन। खैर, जब तक आप 55 के अंत तक आते हैं, तब तक वे वितरित हो चुके होते हैं।

प्रकृति आनंदित हो रही है। क्या बाकि है? अभी ग्यारह अध्याय और बचे हैं। और हम देखते हैं कि धार्मिकता सेवकों का अपेक्षित चरित्र है।

और इन अंतिम दिनों में हम यही देख रहे हैं, दासत्व का चरित्र। हम अपने पापों से क्यों मुक्त हुए हैं ताकि हम परमेश्वर के चरित्र को साझा कर सकें? और वह 56 से 66 है। तो, मैं समझता हूँ कि किताब इसी तरह काम करेगी।

अन्य लोग इसे अलग-अलग तरीकों से समझते हैं, और यह ठीक है। वे ग़लत हो सकते हैं। और मैं भी हो सकता हूँ।

लेकिन मैं किताब को ऐसे ही संचालित होते हुए देखता हूँ। मुझे यह कहना चाहिए कि इस प्रस्ताव के बारे में जो बात सबसे अधिक कही जाती है वह है, एक मिनट रुकिए, ओसवाल्ड। नौकर शब्द 1 से 39 में नहीं आता।

तो आखिर आप उस विषय का उपयोग कैसे कर सकते हैं? खैर, मैं इसका उपयोग इसलिए करता हूँ कि किताब कहां जाती है। 40 से 66 में बहुत स्पष्ट रूप से, लोगों की सेवकाई केंद्र में है। और मैं तर्क दूंगा कि इसे देखते हुए, हम देख सकते हैं कि पुस्तक का पिछला भाग किस प्रकार उस तक ले जा रहा है।

ठीक है। उसके बारे में प्रश्न या टिप्पणियाँ? मेरा मतलब है, यदि आप 30 सप्ताह पूरे कर लेते हैं और आपके दिमाग में यह बात नहीं है, तो मैं स्तब्ध हो जाऊंगा। प्रश्न? टिप्पणियाँ? ठीक है।

एक बार जा रहा हूँ। ठीक है। अध्याय 60, श्लोक 1 से 3. और मैं चाहता हूँ कि आप उन श्लोकों की तुलना करें।

उठो, चमको, क्योंकि तुम्हारी रोशनी आ गई है। प्रभु की महिमा, वह महिमा, तुम पर उभरी है। देख, पृथ्वी पर अन्धियारा छा जाएगा, देश देश के लोगों पर घोर अन्धकार छा जाएगा।

परन्तु यहोवा तुम्हारे ऊपर उदय होगा। उसकी महिमा तुम पर दिखाई देगी। फिर से महिमा है.

और जाति जाति के लोग तेरे प्रकाश की ओर आएंगे, और राजा तेरे उदय के तेज की ओर आएंगे। अब मैं आपसे इसकी तुलना अध्याय 59, छंद 9, 10 और 11 से करने के लिए कहता हूँ। इसलिए न्याय हमसे बहुत दूर है।

धार्मिकता हम पर हावी नहीं होती. हम प्रकाश की आशा करते हैं और अंधकार देखते हैं। चमक के लिए, लेकिन हम निराशा में चलते हैं।

हम अंधों की तरह दीवार को टटोलते हैं। हम उन लोगों की तरह टटोलते हैं जिनके पास आँखें नहीं हैं। हम दोपहर को गोधूलि के समान लड़खड़ाते हैं।

पूर्ण जोश वाले लोगों के बीच, हम मृत व्यक्तियों के समान हैं। हम सब भालू की तरह गुरति हैं। हम कबूतरों की तरह विलाप और विलाप करते हैं।

हमें न्याय की उम्मीद है, लेकिन न्याय नहीं मिला। मोक्ष के लिए, लेकिन यह हमसे बहुत दूर है। क्या आप कहेंगे कि इनके बीच कोई विरोधाभास है? अब बदलाव का कारण क्या है? उन दोनों के बीच में क्या आता है? मुक्तिदाता.

दिव्य योद्धा. वह संपूर्ण खंड, 59, 15बी से 21, बीच में आता है और बताता है कि आप 59, 9, 10, और 11 से 61, 1 से 3 तक कैसे पहुंचते हैं। हमारे लिए लालटेन बनना कैसे संभव है जिसके माध्यम से प्रकाश आता है भगवान की दुनिया पर चमक? केवल एक ही रास्ता है, यदि दिव्य योद्धा आये और उस पाप और अधर्म को परास्त करे जिसने वास्तव में उन्हें और हमें बंदी बना रखा है। अब फिर, कई टिप्पणीकार हैं जो इसे स्वीकार नहीं करेंगे।

वे यह स्वीकार नहीं करेंगे कि 59 की विफलता और पिछले तथा अध्याय 60 में हमारे पास जो है, उसके बीच कोई जानबूझकर संबंध है। वे बस कहेंगे, ठीक है, यह आकस्मिक है। वह एक बात है, यह दूसरी बात है।

मैं उसे एक मिनट के लिए भी नहीं खरीदता। 59, 15बी से 21 वहां जानबूझकर है। वह आया, उसने देखा कि कोई मनुष्य नहीं था, कोई ऐसा नहीं था जो ऐसा कर सके, जो उसकी प्रजा को अधर्म से धर्म में परिवर्तित कर सके।

उसे आश्चर्य हुआ कि बीच-बचाव करने वाला कोई क्यों नहीं था। इसलिए, उसकी अपनी भुजा ने उसे उद्धार दिलाया और उसकी धार्मिकता ने उसे कायम रखा। उसने धार्मिकता को कवच के रूप में धारण किया।

हाँ? हां आगे बढ़ो। वे उन छंदों के साथ क्या करते हैं? कोई इच्छित संबंध नहीं है। आपके पास 59 है जो एक बात कहता है, आपके पास 59बी है, 15बी से 21 है जो कुछ और कहता है, और आपके पास 61 है और उसके बाद एक और बात कहता है, और वे असंबंधित हैं।

यह विभिन्न लोगों द्वारा अलग-अलग समय पर दिए गए भाषणों का एक संग्रह मात्र है। इसीलिए मैं विद्यार्थियों से कहता हूँ, यदि आप अकादमिक बाइबल अध्ययन के अलावा कुछ और कर सकते हैं, तो करें। यदि आप नहीं कर सकते, तो भगवान के लिए, कुछ और न करें।

चर्च को आपकी जरूरत है। लेकिन अकादमिक बाइबिल अध्ययन आज एक खदान क्षेत्र है, जिसमें बड़े पैमाने पर उन लोगों का वर्चस्व है, जिन्होंने विश्वासियों के रूप में शुरुआत की और विश्वविद्यालय में अपना विश्वास खो दिया और उनका अपने जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। तो, यह गंभीर व्यवसाय है।

ठीक है, अब, प्रकाश और महिमा कहाँ से आती है? क्या यह उनके भीतर से आता है? नहीं, ऐसा नहीं होता, है ना? प्रभु का तेज तुम पर उदय हुआ है। प्रभु तुम्हारे ऊपर उदय होगा और उसकी महिमा तुममें दिखाई देगी। हां, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अधर्मी थे और उन्होंने वास्तव में, वास्तव में काम किया और वास्तव में, वास्तव में वही किया जो उन्हें करना चाहिए था और वे धर्मी बन गए।

यह एक मिनट के लिए भी नहीं कहा जा रहा है। यह कह रहा है कि यह प्रकाश जो अब उनमें से चमक रहा है वह एक उपहार है। एक उपहार जो मिल गया है।

अब, प्रकाश किस लिए है? पद 3, राष्ट्र तेरे प्रकाश की ओर आएंगे, और राजा तेरे उदय के तेज की ओर आएंगे। अपने लिए ईश्वर की पूर्णता की तलाश करने में क्या खतरा है? हम तुरंत यह सोच लेते हैं कि यह हमसे आया है। हाँ, और क्या? यह आगे नहीं बढ़ता।

यह मेरे और भगवान के साथ मेरे रिश्ते के बारे में है और भगवान मेरे लिए क्या कर रहा है। गर्व के साथ मूल पाप की ओर वापस लौटें। हां हां।

शैतान को वास्तव में इसकी परवाह नहीं है कि वह हमें खुद पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कैसे प्रेरित करता है। दुनिया का रास्ता ठीक है, लेकिन आत्म-धार्मिकता का रास्ता भी ठीक है। ठीक है।

अब, श्लोक 4 से 14. वह क्या है जो राष्ट्र यरूशलेम लाएंगे? वे दो या तीन चीजें लाने जा रहे हैं। एक क्या है? धन.

हाँ, आपके बेटे और बेटियाँ। ये दो प्राथमिक चीजें हैं। वे अपने धन के साथ आने वाले हैं।

और वे तुम्हारे बेटे-बेटियों को लाने जा रहे हैं। और यदि आपको पूरी तरह से याद है, खासकर अध्याय 40 से, तो सवाल यह है कि क्या निर्वासन का मतलब यह नहीं है कि हमारा काम हो गया? हम एक व्यक्ति के रूप में मिटा दिए गए हैं। हम इन महान साम्राज्यों में समाहित हो गए हैं और यह खत्म हो गया है।

इसलिए उन्हें लगा कि वनवास नहीं हो सकता। क्योंकि अगर ऐसा हुआ, तो हम चले गए। लेकिन वह कहते हैं, नहीं।

वे राष्ट्र, वे राष्ट्र, जिन्होंने कभी तुम पर अत्याचार किया था, आने वाले हैं और वे तुम्हारे बच्चों को लाने वाले हैं। मैरी जो, आप कुछ पूछना चाह रही हैं। मैं एक मिनट बाद श्लोक 3 पर वापस जाना चाहूँगा।

जब आप कह रहे हैं कि हम ईश्वर को खोज रहे हैं, तो ऐसा नहीं है कि हम उसे किसी यादृच्छिक तरीके से खोज रहे हैं क्योंकि उसके पास हमारे जीवन के लिए एक मिशन है। और बात यह है कि जब हम उसे खोज रहे होते हैं, तो हो सकता है कि वह वह न हो जो हम चाहते हैं। तो यह एक तरह का है - मैं सिर्फ पेचीदा शब्द का उपयोग करूँगा।

लेकिन आप वास्तव में नहीं जानते होंगे कि आप क्या मांग रहे हैं। मुझे लगता है कि इसकी बहुत संभावना है। और फिर, मुझे लगता है कि - आपने कल मेरा संदेश सुना।

ईश्वर अपने अंतिम कार्यक्रम की बहुत ही अपर्याप्त समझ के साथ हमारे साथ शुरुआत करने को तैयार है। लेकिन जब तक हम उसके साथ रहेंगे, जब तक हम उसकी पवित्र आत्मा के प्रति उत्तरदायी रहेंगे, वह उस कार्यक्रम के बारे में बताएगा। और यह सब एक बार में नहीं है।

नहीं, आमतौर पर ऐसा नहीं है। यह आम तौर पर है - आपने लगातार कहा है, रुको। हाँ, हम काफी धीमी गति से सीखते हैं।

अच्छा होगा यदि वह हमें एक ही बार में सब बता दे। लेकिन शायद यह अच्छा नहीं होगा अगर वह हमें एक ही बार में सब बता देगा। हम डर जायेंगे और भाग जायेंगे।

या हम इसे प्राप्त ही नहीं कर पाएँगे। हाँ, हमें यह नहीं मिलेगा। हाँ। हाँ। इसलिए हाँ। हाँ।

अच्छा। हाँ। अब वे ये चीजें क्यों लाते हैं? पद 9. प्रभु का आदर करना।

समुद्र तट क्या करेंगे? मेरा इंतजार करना। अध्याय 41 में जो कहा गया था। पृथ्वी के छोर मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वे यह नहीं जानते। उन्हें लगता है कि वे बिल्कुल अच्छा कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में, वह एकमात्र ईश्वर है, चाहे वे इसे जानते हों या नहीं, वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इसलिए, वे ऐसा उसके चरित्र और उसकी प्रकृति के रहस्योद्घाटन के जवाब में कर रहे हैं। लेकिन सबसे अंतिम खंड को देखें। वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? श्लोक 9 का अंतिम खंड। हाँ।

उसने तुम्हें खूबसूरत बनाया है। उसने तुम्हारी महिमा की है। अब सवाल यह है कि वह ऐसा कैसे करता है? और हम इस बारे में और बात करेंगे।

लेकिन वह विषय है। वे मुक्ति प्राप्त इस्राएल में कुछ ऐसा देखते हैं जो उन्हें आकर्षित करता है। और चलिए वहां प्रश्न 3 पर चलते हैं।

उस धन का उपयोग किस लिए किया जाएगा? विशेष रूप से श्लोक 13 को देखें। अभयारण्य को सजाएं। हाँ।

वे आना चाहते हैं और परमेश्वर की महिमा में शामिल होना चाहते हैं। वे आना चाहते हैं और इस आश्चर्य के बारे में कुछ व्यक्त करना चाहते हैं कि भगवान कौन है जिसे वे दीपक में देखते हैं। और दीपक से जो रोशनी चमक रही है।

वे उसका हिस्सा बनना चाहते हैं। अध्याय 2 में वापस। मैं आपको वहां वापस खींचता रहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत प्रोग्रामेटिक है। वे यहोवा के मार्ग के बारे में जानने के लिये उसके भवन के पर्वत पर आना चाहते हैं।

वे दोनों एक साथ चलते हैं। वे पूजा स्थल पर आना चाहते हैं। वे अभयारण्य में आना चाहते हैं।

लेकिन वे वहां आना चाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि अभयारण्य में वे भगवान के तरीके सीख सकते हैं। जिसकी उन्हें सख्त जरूरत है। अब आइए संख्या 2 पर नजर डालें। ये इसराइल के पवित्र वाक्यांश की अंतिम दो घटनाएँ हैं।

श्लोक 9 में और श्लोक 14 में। अब मैंने इसे पहले ही कहा है। हम इसके बारे में पहले भी बात कर चुके हैं।

इस्राएल का पवित्र, यह वाक्यांश किन दो बातों को दर्शाता है? यहां दो विचार हैं जो आपस में जुड़े हुए हैं। क्या रहे हैं? पृथक्करण। लेकिन अलगाव से भी ज्यादा।

संबंध। तो एक तरफ है। यह एक रिश्ता है।

यह इस्राएल का पवित्र है। दूसरा पहलू। वह पूरी तरह से उत्कृष्ट है।

वह यह संसार नहीं है। वह इस दुनिया का कोई हिस्सा नहीं है। लेकिन वह न केवल एक अलग सार से संबंधित है।

वह सृष्टि से एक अलग प्रकार का प्राणी है। और वह अलग कैसे? अच्छा अच्छा। चरित्र।

फिर, मुझे लगता है कि मैंने यह पहले भी कहा है। 20वीं सदी में पवित्रता पर लिखी गई सबसे प्रभावशाली पुस्तक रूडोल्फ ओटो नामक जर्मन विद्वान द्वारा लिखी गई द आइडिया ऑफ द होली थी। और उस पुस्तक में, उन्होंने मूल रूप से पवित्रता को इस प्रकार के अलगाव के रूप में परिभाषित किया।

उन्होंने लैटिन शब्दों का प्रयोग किया। जब आप लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं तो आप हमेशा लैटिन का उपयोग करते हैं। उन्होंने मिस्टीरियम के बारे में बात की जबरदस्त।

मैं नहीं जानता कि वह इस अद्भुत रहस्य को क्यों नहीं कह सका। लेकिन जो विस्मय पैदा करता है। जब हम इसकी उपस्थिति में होते हैं, तो हम भयभीत हो जाते हैं।

उन्होंने एक और शब्द का प्रयोग किया, दिव्य। लेकिन एक चीज़ है जिसके बारे में उन्होंने बात नहीं की। क्योंकि आप देखते हैं, केवल बाइबल में ही एक विशिष्ट पवित्र चरित्र है।

आप उसके उत्कृष्ट सार को उसके उत्कृष्ट चरित्र से अलग नहीं कर सकते। और आश्चर्यजनक बात यह है कि वह उस किरदार को साझा करना चाहते हैं। जब वह कहते हैं, जैसे मैं पवित्र हूँ, वैसे ही तुम्हें भी पवित्र होना चाहिए, तो उनका मतलब यह नहीं है कि हमें भगवान बनना है।

लेकिन उनका मतलब यह है कि, मैं चाहता हूँ कि आप मेरा चरित्र साझा करें। और वह वाक्यांश, इज़राइल का पवित्र, पुस्तक में 25 बार आता है। और फिर याकूब का पवित्र भी है, जो एक बार और केवल यहीं होता है।

संपूर्ण बाइबिल में एकमात्र स्थान। तो, मेरे पैसे के लिए, यह 26 गुना है। उसका मतलब जो भी हो।

संपूर्ण बाइबिल में 31 घटनाओं में से 26 यहाँ यशायाह में हैं। अब आइए इनमें से कुछ पर नजर डालें और समझने की कोशिश करें कि क्या हो रहा है। सबसे पहले, इससे पहले कि हम ऐसा करें, देखें कि उनका उपयोग यहां पद 9 में कैसे किया गया है। तटवासी मेरी प्रतीक्षा करेंगे, पहले तर्शाश के जहाज, दूर से अपने बच्चों को, उनके चांदी और सोने के साथ लाने के लिए, अपने परमेश्वर यहोवा का और इस्राएल के पवित्र का नाम लो, क्योंकि उसी ने तुम्हें सुन्दर बनाया है।

अब, पद 14. तेरे दुःख देनेवालोंके पुत्र तेरे आगे झुककर आएँगे, और जो तुझे तुच्छ जानते थे वे सब तेरे पांवोंपर झुकेंगे। वे तुम्हें यहोवा का नगर, यहोवा का नगर, इस्राएल के पवित्र का सिंथोन कहेंगे।

दूसरे शब्दों में, वे यह पहचान लेंगे कि इस विशिष्ट रिश्ते के कारण आप एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। अब, चलो वापस चलते हैं। अध्याय 1, श्लोक 4. देखो हम कहाँ से आये हैं।

कृपया कोई इसे पढ़े। अध्याय 1, श्लोक 4. हाय, पापी जाति, अधर्म से भरी हुई प्रजा, कुकर्मियों का समूह, और भ्रष्ट करनेवाले बालक। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, उन्होंने इस्राएल के पवित्र को क्रोध दिलाया है।

वे पीछे हट गए हैं. उन्होंने इस्राएल के पवित्र को क्रोध भड़काया है। मेरे पास जो संस्करण है वह कहता है कि उन्होंने इस्राएल के पवित्र का तिरस्कार किया है।

बहुत खूब। यहीं से हमने शुरुआत की. यहीं से हमने शुरुआत की.

इसे अध्याय 5 में फिर से उठाया गया है। हम उस पर गौर करने के लिए समय नहीं लेंगे, लेकिन वही बात। तू ने इस्राएल के पवित्र का अपमान किया है। अब, अध्याय 30, श्लोक 11 पर।

और आपको वास्तव में श्लोक 10 से शुरुआत करनी होगी। वे द्रष्टाओं से कहते हैं, मत देखो। भविष्यद्वक्ताओं के लिये, हमारे लिये यह भविष्यवाणी मत करो कि क्या सही है।

हमसे चिकनी-चुपड़ी बातें करो. भ्रम की भविष्यवाणी करें. रास्ता छोड़ दो, रास्ते से हट जाओ.

आइए हम इस्राएल के पवित्र के विषय में और कुछ न सुनें। अब मुझे पद 12 प्रिय है। इस कारण इस्राएल का पवित्र पुरूष यों कहता है।

क्या आप चाहते हैं कि मैं चुप रहूँ? अच्छा, मैं तुम्हें कुछ बता दूँ। अवमानना, उसे क्रोध के लिए उकसाना। उसे चुप कराने की कोशिश की जा रही है.

अध्याय 30 का पद 15. इस्राएल का हमारे लिए पवित्र वचन क्या है ? पश्चाताप और विश्राम में तुम बच जाओगे। शांति और विश्वास ही आपकी ताकत होगी।

अनुग्रह। क्या आप इधर-उधर भागना, अपने भ्रमों को सच करने की कोशिश करना बंद कर देंगे और आराम करेंगे? मुझमें आराम करो? वह पवित्र व्यक्ति है जो ऐसा कह रहा है। अध्याय 37, श्लोक 23.

यह सन्हेरीब को संबोधित है। किसी ने उसे पढ़ा. निन्दा और निन्दा की।

आपने किसके विरुद्ध आवाज़ उठाई है और अपनी आँखें ऊपर उठाई हैं? इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध। हां हां। मेरे मित्र, आप नहीं जानते कि आपने यहां किसे चुनौती देने के लिए चुना है।

तुम सोचते हो कि तुमने हिजकिय्याह का उपहास किया है। तुम सोचते हो कि तुमने यहूदा के स्थानीय देवता का मज़ाक उड़ाया है। ओह, वह यहूदा का देवता है, ठीक है।

लेकिन वह पवित्र है. आपने जितना सोचा था उससे कहीं अधिक बड़ी गड़बड़ी में फंस गए हैं। अध्याय 41, श्लोक 14.

डरो मत, हे कीड़ा, जेकब। हे इस्राएल के पुरूषो! मैं ही तुम्हारी सहायता करता हूँ, यहोवा की यही वाणी है।

तेरा छुड़ानेवाला इस्राएल का पवित्र है। इसलिए हम उस स्थान से आगे बढ़ चुके हैं जहां लोग प्रभु का मजाक उड़ा रहे हैं, जहां लोग पवित्र व्यक्ति को चुप कराने की कोशिश कर रहे हैं, अशशूर पवित्र व्यक्ति का मजाक उड़ा रहा है और पवित्र व्यक्ति के पास जाने के लिए खुद को बहुत गर्म पानी में डाल रहा है। इस्राएल अनुग्रहपूर्वक स्वयं को उनका मुक्तिदाता घोषित कर रहा है। और पुस्तक के इस पूरे अंतिम भाग में पवित्र, आपका मुक्तिदाता, बार-बार आता है।

क्योंकि वह पवित्र है, वह तुम्हें छुड़ाने में सक्षम है। क्योंकि उसने प्रेम में अपने आप को तुम्हें सौंप दिया है, वह तुम्हें छुड़ाना चाहता है। और वह तुम्हें छुड़ाने जा रहा है।

और राष्ट्र इस्राएल के पवित्र के पवित्रस्थान की महिमा करने आएंगे। ठीक है, आगे बढ़ो। श्लोक 15 से 22.

इस बात का क्या प्रमाण होगा कि लोगों को वास्तव में छुटकारा मिल गया है? श्लोक 15 और 16. हाँ. जब ज़ालिम आयेंगे।

और फिर श्लोक 16 के अंत में क्या होगा? हां हां। आखिरकार, जब ये चीज़ें घटित होंगी तो तुम पहचान जाओगे कि तुम जान जाओगे कि मैं प्रभु हूँ। हमारा समय यहाँ उड़ रहा है।

26.1 बताता है कि आपके पास एक मजबूत शहर है जिसकी दीवारें मोक्ष हैं। और 60.18 कहता है कि तू अपनी दीवारों को उद्धार और अपने द्वार को स्तुति कहेगा। ऐसी कल्पना का क्या मतलब है? वो क्या बोल रही है? ठीक है, वे उसके साथ बंद हैं।

अच्छा अच्छा। और क्या? दीवारें मोक्ष के टोप की तरह हैं। ठीक है, मुक्ति का टोप।

मोक्ष आपकी सुरक्षा बन जाता है। और उसके द्वारों की स्तुति करो। उस कल्पना का क्या मतलब है? ठीक है, प्रशंसा में प्रवेश।

क्षमा? ठीक है, यह सामने की ओर है। जो लोग द्वारों से आते हैं वे प्रशंसा के साथ आते हैं। हे पराक्रमी फाटको, अपना सिर ऊंचा करो, कि महिमामय राजा भीतर आ सके।

हां हां। तो, एक अर्थ है जिसमें मोक्ष है, यदि आप चाहें, तो इस अर्थ में स्थिर है कि यह हमारी सुरक्षा प्रदान करता है, यह हमें घेरता है, लेकिन प्रशंसा उसके संबंध में हमारे जीवन का प्रवेश और निकास है। जब आप भक्तिपूर्वक बाइबल पढ़ रहे हों तो इस प्रकार की कल्पना आपके सोचने लायक है।

हमारे लिए यह करना आसान है, हमारी आंखें सतह पर घूमती रहती हैं और हम वास्तव में नहीं सोचते हैं, अब यह किस बारे में है? आपकी दीवारें मोक्ष हैं। हाँ, ठीक है, अगला श्लोक क्या कहता है? तो, यह आपके समय के लायक है, विशेष रूप से कविता में, यह सोचने की कोशिश करें कि यह कल्पना क्या है, लेखक उस तरह की कल्पना का उपयोग करके क्या बताना चाहता है? अब, श्लोक 21. तेरे सभी लोग धर्मी होंगे।

58 श्लोक 6 से 8 तक वापस जाएँ। और मैं प्रश्न पूछना चाहता हूँ, क्या यह, जब यह कहता है, कि आपके सभी लोग धर्मी होंगे, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या यह एक वास्तविक स्थिति है, या यह केवल एक घोषणा है एक अवस्था? ठीक है, आप सही हैं, कैंडिस, हम 58 में व्यवहार के बारे में बात कर रहे हैं, है ना? हम जीवनशैली के बारे में बात कर रहे हैं, हाँ, हाँ। बिल्कुल, और इसलिए, फिर से, ऐसे कई लोग हैं जो इस पूरे मार्ग के संबंध में कहेंगे, नहीं, नहीं, यह वह धार्मिकता है जो विश्वास से है। परमेश्वर घोषणा करता है कि हम धर्मी हैं, यद्यपि हम धर्मी नहीं हैं।

मुझे ऐसा नहीं लगता। अब, निश्चित होने के लिए, निश्चित होने के लिए, औचित्य में, हमें मसीह की धार्मिकता दी गई है। हमें मसीह के स्थान पर रखा गया है।

यह एक धार्मिक सत्य है। लेकिन, मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि हम वहाँ नहीं रुक सकते। वह हमें वह स्थान देता है ताकि हम उस चरित्र को प्रकट कर सकें।

वह तो हमें दे देता है, फिर हम उसका क्या करेंगे? बिल्कुल, हाँ, हाँ। इसलिए, फिलिप्पियों में, पॉल कहता है, मैं वह धार्मिकता चाहता हूँ जो विश्वास से आती है। और कई लोग कहेंगे, यह एक स्थिति है।

परमेश्वर आपको यीशु के रंगीन चश्मे से देखता है, वह आपको धर्मी के रूप में देखता है, भले ही हम सभी जानते हैं कि आप धर्मी नहीं हैं, लेकिन यह विश्वास से धार्मिकता है, कर्मों से नहीं। खैर, वह बात ग़लत है। क्या मैं अपनी ताकत से परमेश्वर के लिए अच्छा बन सकता हूँ? कदापि नहीं।

आप और मैं अपने रिश्तों में, अपने व्यवहार में, अपनी जीवनशैली में भगवान का जीवन कैसे जी सकते हैं? केवल एक ही रास्ता, विश्वास से। क्या आपको मेरी बात दिखती है? चरित्र परिवर्तन विश्वास से होता है। यह चरित्र परिवर्तन का सवाल नहीं है, ओह यह काम है, और स्थिति है, यह विश्वास है।

नहीं, ये दोनों हैं। हम एक नई स्थिति में आ गए हैं, अब दुश्मन नहीं, बल्कि बेटे और बेटियाँ, विश्वास के द्वारा। भगवान का शुक्र है।

और विश्वास के द्वारा, हम परमेश्वर का जीवन जीने में सक्षम हैं। ठीक है। तेरी प्रजा के सब लोग धर्मी होंगे।

मेरे रोपण की शाखा. अब, मैं चाहता हूँ कि आप उस वाक्यांश पर अपनी नजर रखें। मेरे रोपण की शाखा.

अध्याय एक में बहुत पहले, लोगों की तुलना एक सूखे हुए जंगल से की गई थी जो आग के प्रति संवेदनशील है जो फैलने वाली है। पेड़ों की यह भाषा किताब में चलती है। पेड़ अहंकारी हो सकते हैं, वे ईमानदार हो सकते हैं, वे घमंडी हो सकते हैं, या वे भगवान का एक धन्य उपहार हो सकते हैं।

ठीक है, उस पर अपनी नजर बनाए रखें। अब, अध्याय 61, एक से तीन। और मैं आपसे अध्याय 11, श्लोक एक से तीन तक को देखने के लिए कहता हूँ, और मुख्य बात जो मैं उम्मीद कर रहा था कि आप देखेंगे कि आत्मा पर वही जोर दिया गया है।

अध्याय 11, मसीहा की अपनी चर्चा में, इस बारे में बात करता है कि आत्मा मसीहा के माध्यम से अपना जीवन कैसे जीएगा। और इसलिए यह यहाँ फिर से है। प्रभु परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है।

क्यों? क्योंकि प्रभु ने मेरा अभिषेक किया है। अब मैं पूरी तरह से आश्चस्त हूँ, और मैं पूरी तरह से गलत भी हो सकता हूँ, लेकिन मैं पूरी तरह से आश्चस्त हूँ कि यीशु के बपतिस्मा में यही हो रहा है। फिर से, मुझे आशा है कि इन चीज़ों पर तत्काल पुनरावृत्ति होगी।

मैं जॉन का चेहरा देखना चाहता हूँ, तुम्हें पता है? वह इन लोगों को ईश्वर के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, ईश्वर के नाम पर बपतिस्मा दे रहा है... यीशु, आप यहाँ क्या कर रहे हैं? तुम्हें मुझे बपतिस्मा देना चाहिए! और यीशु कहते हैं, आओ हम सब धर्म पूरा करें। जॉन, चलो यहाँ सही काम करें। सही बात क्या है? यह प्रदर्शित करने के लिए कि परमेश्वर की आत्मा इस व्यक्ति पर उतरती है, वह वास्तव में मसीहा है।

आत्मा मुझ पर क्यों है? क्योंकि प्रभु ने मेरा अभिषेक किया है। तो, नहीं, यीशु को पवित्र आत्मा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं थी। चर्च के पाखंडों में से एक यह है कि यीशु आत्मा द्वारा अभिषिक्त होने पर ईश्वर का पुत्र बन गया, जिसके बारे में मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ, बकवास।

वह आरंभ से ही ट्रिनिटी का दूसरा व्यक्ति था। वह यहां कुछ नहीं बना, लेकिन यह एक प्रतीकात्मक कार्रवाई थी जिसने पुष्टि की कि यह वास्तव में मसीहा था। वास्तव में, वह यशायाह 61 को पूरा कर रहा है।

अब, अभिषिक्त व्यक्ति क्या करने जा रहा है? क्या हम इसे यहां सूचीबद्ध कर सकते हैं? ठीक है, वह उपदेश देने जा रहा है। वह किसके लिए खुशखबरी लाने वाला है? गरीब। ल्यूक कहते हैं, धन्य हैं गरीब।

और मुझे नहीं लगता कि मैथ्यू गलत है जब वह कहता है, आत्मा में गरीबों के लिए। कभी-कभी हम जो अमीर होते हैं, इसे एक बहाने के रूप में इस्तेमाल करते हैं, लेकिन आम तौर पर गरीब ही इसके लिए दुखी होते हैं। हम यहां इसी बारे में बात कर रहे हैं।

हमने उस नोट को पूरी किताब में घूमते हुए देखा है। वे लोग जो अपने आप में और अपनी धार्मिकता में खड़े हो सकते हैं, उनके पास भगवान से सुनने के लिए कुछ भी नहीं है। फिर से, यीशु ने इसकी पुष्टि की।

आप डॉक्टर को किसी ऐसे व्यक्ति के पास न भेजें जो ठीक हो। आप डॉक्टर को किसी ऐसे व्यक्ति के पास भेजें जो जानता हो कि उसे मदद की ज़रूरत है। ठीक है, वह और क्या करने जा रहा है? वह टूटे हुए दिल को ठीक करने जा रहा है।

और क्या? बंदियों के लिए आज़ादी. और क्या? कैदियों को रिहा करो. कैदियों को क्षमा करें? वह यहोवा की कृपा के वर्ष और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध के दिन की घोषणा करेगा।

और मुझे आशा है कि इस समय तक मुझे इस संदर्भ में प्रतिशोध के बारे में आपसे बात करने की आवश्यकता नहीं होगी। यह अच्छी खबर है बुरी खबर नहीं. और शोक मनाने वालों को सांत्वना देना।

अब फिर से, मुझे लगता है कि यदि आप इस अंश को जानते हैं और आप धन्य वचन सुनते हैं, तो आप जानते हैं कि यह आदमी क्या दावा कर रहा है। धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी। हाँ।

और उस पहाड़ी पर खड़े वे सभी लोग कह रहे हैं, एक मिनट रुकिए। यह कौन है? लेकिन एक मिनट रुकिए. मैं नाज़ारेथ से हूँ.

मैं उसे तब से जानता था जब वह एक नाक वाला बच्चा था जो सड़कों पर इधर-उधर दौड़ता रहता था। वो क्या बोल रही है? शोक के स्थान पर प्रसन्नता का तेल। फीकी आत्मा के स्थान पर प्रशंसा का वस्त्र।

अब मैं यहीं पर आ रहा हूँ। श्लोक 3 में बाद वाला कथन। वह यह सब क्यों करने जा रहा है? उन्हें एक नया नाम दें. प्रभु का रोपण.

कि वे धर्म के बांज कहलाएं। प्रभु का रोपण. उसे याद रखो? जो शाखा उसने लगाई है.

प्रभु का रोपण ताकि उसकी महिमा हो। हाँ। वह हमें पेड़ों में बदलने जा रहा है।

वह अपना खुद का बागान शुरू करने जा रहे हैं। दक्षिणी वृक्षारोपण नहीं जहां हम सभी गुलाम हैं, बल्कि एक वृक्षारोपण है। जड़युक्त, फलदायक, उत्पादक।

एक वरदान। यही उसका लक्ष्य है. जो पछतावे वाले हैं.

जो लोग अपने पाप के कारण टूटे हुए हृदय वाले हैं। जो लोग अपने पाप के बन्धुए हैं। शोक मनाने वाले.

हे प्रभु, परमेश्वर ने मेरा अभिषेक किया है। हाँ। मुझे लगता है, खूबसूरती राख के बराबर है।

हाँ। राख के बदले सौंदर्य. और फिर, आपको अध्याय 3 का अंत याद है, जहां सिष्यों की खूबसूरत महिलाएं, हर तरह के साज-सज्जा के साथ, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं, टखने के कंगन के साथ चलती थीं, जो निश्चित रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, इसलिए वे उस तरह नहीं चल सकती थीं वे जुते हुए खेत से गुजर रहे हैं, लेकिन उन्हें छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे।

और भगवान कहते हैं, हाँ, उस खूबसूरत कढ़ाई वाले सैश के स्थान पर एक रस्सी होगी। उस खूबसूरत केश की जगह गंजापन आने वाला है। जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से लेता हूँ, लेकिन फिर भी।

लेकिन यहां, हमने इसे उल्टा कर दिया है। राख के बदले सौंदर्य. हमारे अधर्म की राख.

हमारी टूटन की राख. हमारी असफलता की राख. उसकी खूबसूरती.

सवाल यह है कि टूटा हुआ दिल पाप के लिए होता है या दुःख और दुःख के लिए? और मेरा उत्तर हां है. मुझे लगता है कि यह समावेशी है. वे सभी चीज़ें जो हमारे दिल को तोड़ देती हैं।

और काफी हद तक, टूटे हुए दिल दुनिया में पाप के कारण हैं। तो, मनुष्य के रूप में हमारे सामने आने वाले सभी दुखों से निपटने के लिए मसीह आए हैं। और मुझे विश्वास है कि इसीलिए आपके पास यशायाह 53 में वह दिलचस्प भाषा है।

उसने हमारे दर्द और हमारी बीमारियों को ले लिया है, इसका शाब्दिक अर्थ यही है। अब मुझे नहीं लगता कि किंग जेम्स गलत है जब वह इसका अनुवाद करता है, हमारे दुःख और हमारे दुःख। मुझे लगता है कि जो लोग इसे पूरी तरह से बीमारी और दर्द तक ही सीमित रखेंगे, वे गलत हैं।

लेकिन अगर हम केवल यह कहें कि यह आध्यात्मिक प्रकार की चीज़ है, तो मुझे लगता है कि यह भी गलत है। क्रूस में, उसने इस दुनिया के सभी दर्द, दुःख, बीमारी, दुःख को अपने ऊपर ले लिया है। और मैं हमेशा, गुड फ्राइडे के दिन ध्यान करने से कभी भी इससे दूर नहीं हो सकता।

ज़रा सोचो। उन तीन या चार घंटों में, इस दुनिया का सारा दर्द, सारा दुःख, सारी भयावहता, सारी त्रासदी उस पर आ पड़ी। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उसने गेथसमेन में खून की बूंदें टपकाईं और भगवान से पूछा कि क्या कोई और रास्ता है।

कई लोग गाते-गाते शहीद हो गए हैं. तो, इस यीशु मित्र का मामला क्या है? संकोची व्यक्ति? अरे नहीं। अरे नहीं।

क्योंकि उसके पास क्या आने वाला था. और परिणामस्वरूप वह स्वतंत्रता की घोषणा करने में सक्षम हो गया। ठीक है, हमारा समय चला गया।

और हमारे पास अभी भी यहां जाने के रास्ते हैं। मैं शीघ्रता से कुछ बातें बताना चाहूँगा। अब हम पहाड़ी के दूसरी ओर से नीचे उतरना शुरू कर रहे हैं।

हम यहां 61.1-3 में शीर्ष पर आ गए हैं। और वास्तविक रूप से, पूरी चीज़ का लक्ष्य क्या है? ताकि वे धर्म के बांजवृक्ष, अर्थात् यहोवा के लगाए हुए वृक्ष कहलाएं, और उसकी महिमा हो। वास्तविक अर्थों में, यही इसका चरम है। अब हम दूसरी तरफ से शुरू करते हैं।

वे प्राचीन खंडहरों का निर्माण करेंगे। वे पिछली तबाही को फिर से बढ़ा देंगे। वे उजड़े हुए नगरों की, जो कई पीढ़ियों से उजड़े हुए हैं, मरम्मत करेंगे।

परदेशी खड़े होकर तुम्हारी भेड़-बकरियों की देखभाल करेंगे। परदेशी तुम्हारे हलवाहे और दाख की बारी के माली होंगे। ये लोग जिन्होंने तुम पर अत्याचार किया, वे तुम्हारे दास बनेंगे।

वे आपके लिए आपका छोटा-मोटा काम करने जा रहे हैं। क्यों? श्लोक 6, ताकि तुम परमेश्वर के याजक कहलाओ। वे तुम्हारे बारे में हमारे परमेश्वर के सेवकों के रूप में बात करेंगे।

तुम राष्ट्रों का धन खाओगे। तू उनकी महिमा पर घमण्ड करेगा। आह, याद है भगवान ने निर्गमन 19 में क्या कहा था? उस अध्याय में जो उन्हें वाचा के लिए तैयार कर रहा है? यदि तुम मेरी वाचा स्वीकार करते हो, तो तुम याजकों का राज्य, राज पुरोहित, एक पवित्र राष्ट्र बनोगे।

उन्होंने सोचा कि परमेश्वर का राज्य पाने का मतलब सिंहासन पर एक डेविड वंश का राजा होना है, कि वे एक स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य होंगे जिसकी स्वतंत्रता की गारंटी एक स्थायी सेना द्वारा दी जाएगी, और यही परमेश्वर का राज्य होने का मतलब होगा . वे निर्वासन से वापस आये और ऐसा कुछ भी संभव नहीं है। कोई डेविडिक राजा नहीं है।

वे अमीर नहीं हैं. वे दुनिया का केंद्र नहीं हैं. उनके पास कोई सेना नहीं है.

उनका कोई स्वतंत्र राज्य नहीं है. तो, यह खत्म हो गया है. अब, दोस्तों, आपके पास भगवान के लिए, दुनिया के पुजारी बनने का मौका है।

और वास्तविक अर्थ में, वह तब था जब उन्होंने अपनी पहचान की भावना को पुनः प्राप्त करना शुरू किया, जब उन्होंने कहा, आह, हम पुजारियों का राष्ट्र बन सकते हैं। अब, मुझे नहीं लगता कि वे अभी भी समझ पाए हैं कि पुरोहिताई वास्तव में दूसरों के लिए थी। उन्होंने इसे सरलता से देखा, ठीक है, हम भगवान की सेवा करने जा रहे हैं।

लेकिन पुजारी क्या है? एक पुजारी एक मध्यस्थ होता है जो भगवान और दुनिया के बीच खड़ा होता है। इसलिए यदि उत्पीड़क, पूर्व उत्पीड़क, आपके नौकर बन जाते हैं, तो यह आपके लिए अंततः वह बनने का अवसर बन जाता है जिसके लिए आप शुरुआत में बुलाए गए थे। ठीक है, थोड़ा और आगे बढ़ो।

मैं यहोवा के कारण आनन्दित होऊंगा, और मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन होगा। यह पद 10 है। क्योंकि उस ने मुझे उद्धार का वस्त्र पहिनाया है।

उसने मुझे धार्मिकता की चादर ओढ़ा दी है। जैसे दूल्हा याजक की तरह सुंदर साफा सजाता है, जैसे दुल्हन अपने गहनों से अपना श्रृंगार करती है, जैसे पृथ्वी अपने अंकुर उगाती है, जैसे बगीचे में जो कुछ बोया जाता है उसे उगता है, वैसे ही प्रभु परमेश्वर करेगा सभी राष्ट्रों के सामने धार्मिकता और प्रशंसा उगेगी। अब, यदि आपके पास आरएसवी या एनआरएसवी, या यहां तक

कि कुछ मामलों में एनआईवी है, तो इनमें से कई स्थानों पर जहां धार्मिकता शब्द प्रकट होता है, आपको पुष्टि मिलेगी, विशेष रूप से यहां श्लोक 11 में।

वह सब राष्ट्रों के सामने सत्यनिष्ठा और प्रशंसा को बढ़ावा देगा। नहीं, एनएलटी ऐसा नहीं है। एनएलटी ने इसे सही पाया।

क्या आप प्रतिशोध और धार्मिकता के बीच अंतर देखते हैं? अब, वे जो कर रहे हैं वह यह कह रहे हैं, ठीक है, यह परमेश्वर की धार्मिकता आप में प्रदर्शित है। यह आपकी पुष्टि है। फिर, वहाँ एक धर्मशास्त्रीय पाठ चल रहा है।

पाठ कहता है कि वह धार्मिकता बनायेगा। यह परमेश्वर की धार्मिकता नहीं कहता। राष्ट्रों के सामने धार्मिकता उमड़ेगी।

सिय्योन की खातिर, मैं चुप नहीं बैठूँगा। यरूशलेम की खातिर, मैं तब तक चुप नहीं बैठूँगा जब तक उसकी धार्मिकता चमक के रूप में और उसका उद्धार जलती हुई मशाल के रूप में सामने न आ जाए। अब, ध्यान दें, और मैं आपको आधी रात से पहले जाने दूँगा।

उस जोड़ी पर ध्यान दें। जोड़ना नहीं, बल्कि जोड़ना। याद रखें कि मैंने हिब्रू कविता के बारे में क्या कहा है, कि एक ही बात दो बार कही गई है, लेकिन पर्यायवाची शब्दों का उपयोग करते हुए।

तो, धार्मिकता को मोक्ष के साथ जोड़ा गया है। अब, उनमें से प्रत्येक दूसरे को कुछ न कुछ प्रदान करता है। वे केवल स्पष्ट पर्यायवाची शब्द नहीं हैं।

तो, इसे बचाना क्या है? इसे आपके जीवन में ईश्वर की धार्मिकता को प्रदर्शित करने में सक्षम बनाया जाना है। लेकिन, इसी तरह, आप अपने जीवन में भगवान की धार्मिकता को प्रदर्शित करने का एकमात्र तरीका भगवान के दिव्य उद्धार का परिणाम है। मैं एक अच्छा आदमी हूँ।

मैं धर्मात्मा हूँ। जिस तरह से भगवान लोगों को धर्म बनने के लिए बुलाते हैं। और यदि आप लोग थोड़ी अधिक मेहनत करें तो आप भी मेरे जितने अच्छे हो सकते हैं।

कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं। ओह अच्छा, मैं बच गया। इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कैसे रहता हूँ।

नहीं, हर एक दूसरे को सूचित करता है। बचाये जाने का अर्थ है परमेश्वर की धार्मिकता को जीना। लेकिन आप कृपापूर्ण उद्धार के बिना संभवतः परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं जी सकते।

वे आपस में जुड़े हुए हैं। ईश्वर हममें अपनी इच्छा और इच्छानुसार कार्य करता है। हां हां।

कांपते हुए अपने उद्धार का कार्य करो। क्योंकि भगवान यह कर रहा है। वहाँ अद्भुत, अद्भुत मिश्रण है।

ठीक है, मुझे बस कुछ और बातें बताने दीजिए और हम रुकेंगे। इन शेष छंदों में, यह फिर से है। राष्ट्र तेरी धार्मिकता देखेंगे।

समस्त राजाओं में आपकी महिमा है। यहां धार्मिकता और महिमा जोड़ी गई है। तुम्हें एक नये नाम से बुलाया जाएगा जो प्रभु का मुख देगा।

तुम सुंदरता का ताज बनोगी। फिर, यहाँ उन विषयों में से एक और है। आप अध्याय 28 पर वापस जाएँ।

और सामरिया हरी घाटी के सिरे पर मतवालों के सिर का मुकुट है। आप प्रभु के हाथ में सुंदरता का मुकुट होंगे। अब और नहीं छोड़ा जाएगा।

एक और शब्द है जो पहले सामने आया है। तुम्हें हेपज़ीबा कहा जाएगा। अब हम अपनी बेटियों का ऐसा नाम नहीं रखते।

लेकिन इसका शाब्दिक अर्थ है कि मेरी खुशी उसमें है। यह एक सुंदर नाम है. हाँ, या हेप्सी ।

जब हम यह तय करने की कोशिश कर रहे थे कि क्या हम अपनी बेटी एलिजाबेथ के लिए एक उपनाम का उपयोग करेंगे, तो करेन ने बेट्सी का प्रस्ताव रखा। और मैंने कहा, नहीं, हमारे पास बेट्सी नाम की एक गाय थी। वह काम नहीं करेगा।

इसलिए, वह उसे अपनी दुल्हन के रूप में बोलता है। और अंत में, श्लोक 10, प्रवेश करो, द्वारों से गुजरो। लोगों के लिए रास्ता तैयार करो।

निर्माण करो , राजमार्ग बनाओ। एक सामंजस्य का उपयोग करें और यशायाह की पुस्तक में राजमार्ग को देखें। और आपको यह बहुत दिलचस्प लगेगा।

एक सिग्नल ऊपर उठाएं. कुछ संस्करण, और मुझे वास्तव में एक बैनर कहना बेहतर लगता है। एक संकेत ध्वज .

उसे देखो. सिथ्योन की बेटी से कह, देख, तेरा उद्धार आ रहा है। देखो, उसका प्रतिफल उसके पास है।

उसका प्रतिफल उसके सामने है। और वे पवित्र लोग कहलाएंगे। प्रभु का छुड़ाया हुआ।

तुम्हें ढूंढ़कर बुलाया जाएगा. एक शहर जिसे छोड़ा नहीं गया है. हाँ।

परमेश्वर अपने लोगों को धर्मी बनने में सक्षम बनाता है। वह दिव्य योद्धा जिसके खून के धब्बे उसके कपड़ों पर लगे हैं। वह वही है जो शुभ सन्देश सुनाने के लिये प्रभु का अभिषिक्त है।

वह एक। और इसका परिणाम यह होगा कि तुम परमेश्वर की दुल्हन बनोगी जिस पर वह गर्व करता है। और सब जातियां तेरे कारण तेरे परमेश्वर के पास आएंगी। तथास्तु।

मुझे प्रार्थना करने दीजिए. पिता, इतने दिनों तक आपके साथ रहने के लिए धन्यवाद। इन प्यारे दोस्तों के लिए धन्यवाद। और हे भगवान, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिन चीजों के बारे में हमने बात की है उनमें से कुछ को उनके दिलों में जगह मिलेगी। इससे आप सचमुच उन्हें यकीन दिला देंगे कि वे आपके लिए कितने कीमती हैं।

और आप सचमुच उनके जीवन में अपनी सुंदरता प्रदर्शित करेंगे। ऐसे तरीकों से जो पुरुषों और महिलाओं को आपकी ओर आकर्षित करेंगे। धन्यवाद ईशू। आपके नाम पर, आमीन।

भगवान आप सब का भला करे। यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं।

यह सत्र संख्या 30, यशायाह अध्याय 63 से 66 है।